

● सुनो, पढ़ो और गाओ :

७. कुछ पाकर देख

-बुद्धिनाथ मिश्र

जन्म : १ मई १९४९, देवघा, समस्तीपुर (बिहार) । **रचनाएँ :** जाल फेंक रे मछोरे, शिखरिणी, जाड़े में पहाड़, नवगीत दशक आदि ।
परिचय : बुद्धिनाथ मिश्र जी को अनेक सम्मान-पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । वे गीतकार, लेखक तथा काव्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं ।
 प्रस्तुत कविता में कवि ने कुछ खोने-पाने, सपनों को सुलटाने, मन के दिए जलाकर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है ।



स्वयं अध्ययन

निम्नलिखित शब्दों से संबंधित सुनी हुई कोई कविता सुनाओ :
 जैसे- चाँद, लड़की, घर, दिया ।

कुछ खोकर, कुछ पाकर देख ।
 दुनिया नई बसाकर देख ।
 मौसम कदमों पर होगा
 गैरों को अपनाकर देख ।
 काँटे खुलकर हँस देंगे
 बहलाकर, सहलाकर देख ।
 मैं भी कितना हूँ तनहा
 यह तू मुझमें आकर देख ।
 लड़की लाड़ली लड़की है
 चाँद-सितारे लाकर देख ।
 सपने ही तो साथी हैं
 सपनों को सुलटाकर देख ।
 सारा जंगल जिंदा है
 तू बादल बरसाकर देख ।
 लौट के बिछड़े आएँगे
 घर की राह सजाकर देख ।
 'नाथ' अँधेरे को मत कोस
 मन का दिया जलाकर देख ।



- उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता सुनाएँ । विद्यार्थियों से कविता का व्यक्तिगत, सामूहिक, गुट में गायन करवाएँ ।
 प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें । कविता की कौन-सी पंक्ति उन्हें अच्छी लगी, पूछें एवं कारण बताने हेतु प्रेरित करें ।



मैंने समझा

शब्द वाटिका



नए शब्द

गैर = पराये

तनहा = अकेला

कोसना = भला-बुरा कहना



खोजबीन

चाँद पर पहुँचने वाले प्रथम अंतरिक्ष यात्री का यात्रावर्णन ढूँढ़ो और सुनाओ।



अध्ययन कौशल

विद्यालय के पाँचवीं से आठवीं कक्षाओं के छात्र और छात्राओं की संख्या संयुक्त स्तंभालेख द्वारा दर्शाओ।



बताओ तो सही

गणित सातवीं कक्षा पृ. ५१-५२

‘स्वयं को बदलो, समाज बदलेगा’, इस विषय पर चर्चा करो और बताओ।

* कविता की पंक्तियों का अर्थ लिखो :

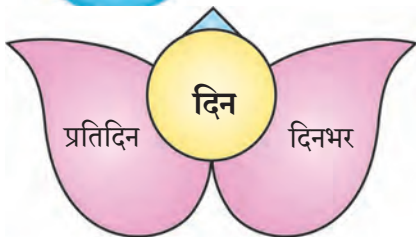
(क) सारा जंगल -----
----- सजाकर देख।

(ख) मौसम -----
----- सहलाकर देख।



भाषा की ओर

दाएँ पंख में उपसर्ग तथा बाएँ पंख में प्रत्यय लगाकर शब्द लिखो तथा उनके वाक्य बनाओ :



मैं प्रतिदिन खेलता हूँ।

दिनभर नहीं खेलना चाहिए।

